अध्याय–17

रामू काका की दुकान

75S5Q1

मैं रामू काका की दुकान के बगल से रोज स्कूल जाती हूँ। उनकी दुकान में कई लोग सुबह से काम करते नज़र आते हैं– अकरम भाई, नवीन भाई, आलम और अली दादा। एक दिन स्कूल से लौटते समय सुखदा रामू काका से बिना पूछे ही दौड़कर दुकान में घुस गई। कितना कुछ हो रहा था दुकान में।

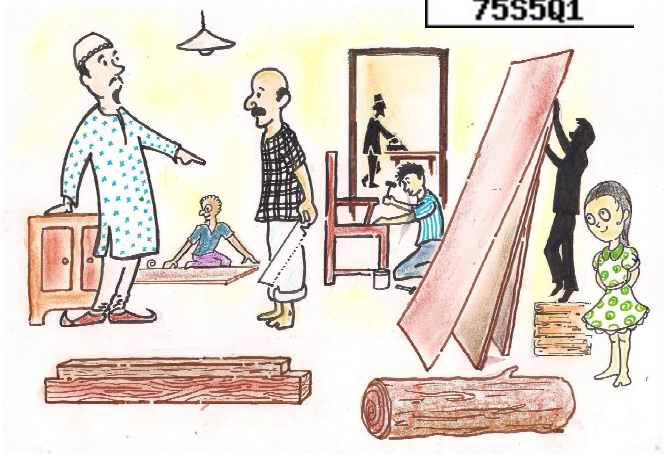

दो लोग एक औजार को पकड़कर लकड़ी का पटिया छील रहे थे। अकरम भाई तो लकड़ी के पटिये काटकर और उन्हें जोड़कर कुर्सी बनाने में लगे थे।

बताइए–

रामू काका की दुकान में क्या काम हो रहा था?

_____

_____

आपके गाँव या शहर में भी कई प्रकार की दुकानें होगीं। आपने कौन–कौन सी चीजों की दुकानें देखी हैं? उनके नाम लिखिए।

_____

_____

_____

_____

आलम और अली दादा पटियों में सुन्दर नक्काशी कर रहे थे। नवीन भाई पानी जैसी कोई चीज़ ब्रश में लगाकर लकड़ियों को चिकना बना रहे थे। दुकान के पीछे बहुत सारी लकड़ियाँ पड़ी हुई थीं।

सुखदा– पानी जैसी यह क्या चीज़ है, नवीन भाई?

नवीन– यह वॉर्निश है। इससे लकड़ी चिकनी और सुंदर हो जाती है। लकड़ी में लम्बे समय तक कीड़ा भी नहीं लगता है।

सुखदा– अरे! दुकान में कितने सारे लोहे के औजार हैं? वहाँ काँच के चौकोर टुकड़े क्यों पड़े हैं?

नवीन– कई बार लोग तस्वीर लेकर आते हैं। उनको हम फ्रेम में डाल देते हैं। जिसमें काँच की भी जरूरत होती है। इस तरह उनके पास वह तस्वीर काफी दिन तक सुरक्षित रह जाती है।

सुखदा– ओहो, आज तो काफी देर हो चुकी है। कल फिर आऊँगी। सबको धन्यवाद।

क्या आपने कभी लकड़ी के दरवाज़े, टेबल, चौकी बनते हुए देखा है? उनको बनाने के लिए लकड़ी कैसे तैयार की जाती है?

_____

_____

_____

रामू काका की दुकान से लौटने के बाद सुखदा ने राजू भैया को दुकान के बारे में बताया। राजू भैया ने तब अपनी एक किताब निकालकर सुखदा को नीचे बने चित्र दिखाए।

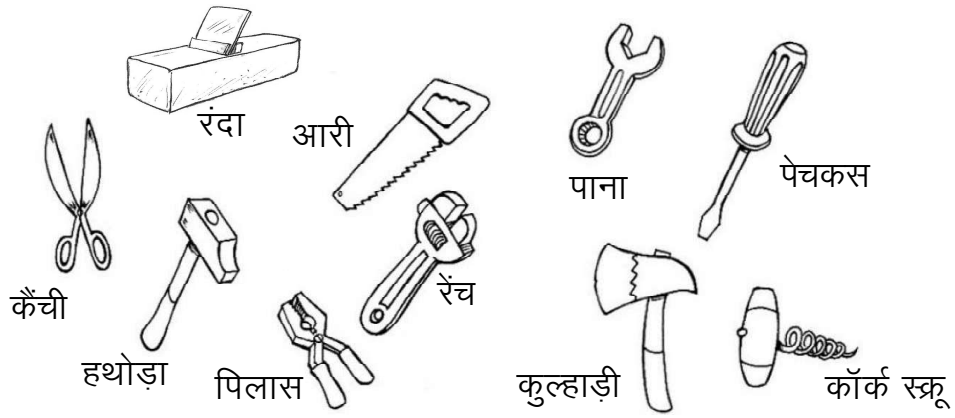

क्या आप इन चित्रों को देखकर बता सकते है कि कौनसा औजार किस काम आता है?

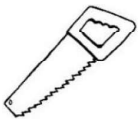

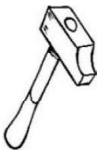

_____

_____

_____

_____

_____

_____

अगले दिन सुखदा फिर रामू काका की दुकान पर थी।

सुखदा– रामू काका, आप अपनी दुकान के लिए औजार, ब्रुश, वॉर्निश और दूसरी चीज़ें कहाँ से लाते हैं?

रामू काका– बेटा, कई बार तो इसके लिए मैं खुद शहर जाता हूँ और वहीं से खरीद लाता हूँ। कई बार शहर से कोई आते समय अपने साथ ले आता है। कभी शहर के दुकान वाले खुद भी भेज देते हैं। गाँव के लुहार के पास भी कई औजार बन जाते हैं। रंग और वार्निश कभी हमारे गाँव के 'जोसेफ' की दुकान पर भी मिल जाता है।

सुखदा– लकड़ी कहाँ से मिलती है? क्या आप इतने पेड़ काट देते हैं?

रामू काका– मैं तो नहीं काटता पर लकड़ी बेचने वाले व्यापारी अपने कामगारों से पेड़ कटवाते हैं। हम उनसे लकड़ी खरीदते हैं।

अपने दोस्तों के साथ चर्चा करके लिखिए–

क्या पेड़ काटना ठीक है?

_____

_____

लकड़ी नहीं हो तो रामू काका और उनके दुकान के लोग क्या करेंगे?

_____

_____

सुखदा– ''रामू काका, क्या आप कोई दूसरा काम नहीं कर सकते?''

रामू काका– ''नहीं बेटा, इसी काम को मैंने बचपन से अपने बाबा, दादा, परदादा को करते देखा और उनसे सीखा है। हाँ, मेरा बेटा राकेश पढ़ने के लिए शहर गया हुआ है। शायद वह यह काम न करे। कल मुझे भी शहर जाना है। वहाँ के एक बड़े दुकान में मेरी दुकान के कई सामान बिकने वाले हैं। यह काम नहीं करूगा तो कमाई कैसे होगी? यही तो मेरा व्यवसाय है। अपना घर मैं इसी से चलाता हूँ।''

रामू काका के बाद दुकान का काम कैसे चलेगा? सोचकर लिखिए।

_____

_____

रामू काका शहर क्यों जाते हैं?

_____

_____

क्या रामू काका को कोई दूसरा काम करना चाहिये?

_____

सुखदा– ''रामू काका हमारे गाँव में लोग भी तो आपकी दुकान का सामान खरीदते हैं तो शहर क्यों जाते हैं?''

रामू काका– ''शहर में अच्छे दाम मिलते हैं और सामान भी ज्यादा बिकता है इसलिये जाना पड़ता है।''

परियोजना कार्य–

आपने गाँव में बढ़ई, मोची, बुनकर, किसान किसी न किसी को तो देखा ही होगा। सुखदा ने जिस तरह से रामू काका से जानकारी ली उसी प्रकार से आप भी गाँव के किसी एक व्यवसाय के बारे में जानकारी लीजिए और लिखिए। उनके औजार या दुकान का चित्र बना सकते हों तो जरूर बनाएँ। हाँ, अपने घर के व्यवसाय के बारे में भी लिख सकते हैं।